साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 34, अप्रैल(प्रथम), 2018

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

लेखक - डॉ० रिक लिंडल

अनुवादक - डॉ० अनिल चड्डा

बुढ़ापा

पुरानी आत्मा ने बोलना जारी रखा, "प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि धरती पर जीवन सीमित है. जैसे की सभी वृत्ताकार प्रक्रियाओं के साथ, जो चेतन कैनवास से शुरू होती हैं, होता है और सामंजस्य के विकास के माध्यम से तुम्हारे भौतिक संसार में प्रकट होती हैं, तुम्हारा शरीर बीज से बड़ा होता है, बूढ़ा होता है, और मुरझा जाता है, जब तक कि यह और नहीं चल पाता, और मर जाता है. यह बूढ़े होने की प्रक्रिया कइयों के लिये स्वीकार करनी मुशिकल होती है, और लोग बहुत चरमसीमा की हद तक जा कर अपने शरीर को बदल कर युवा दिखना चाहते हैं. जबकि पश्चिमी सभ्यता में युवा दिखना सराहा जाता है, इसे स्वीकार करना अंततः महत्वपूर्ण है कि बुढ़ापे की प्रक्रिया सामान्य है और अपरिहार्य है. इसे एक मूल आस्था बनने की आवश्यकता है."

धरती पर जीवन सीमित है:
तुम बीज से बड़े होते हो, बूढ़े होते हो, मुरझा जाते हो, और मर जाते हो.

रिक्की बीच में बोल उठा, "मुझे इससे परेशानी नहीं होती - अभी!"

पुरानी आत्मा मुस्कराते हुए बोली, "सत्तरह साल की उम्र पर, इसे परेशान नहीं करना चाहिये, लेकिन यह संभावना है कि जैसे-जैसे तुम बड़े होगे तुम जवान होना चाहोगे."

"आज के लिये लगभग समाप्त हो गया है. मैं मृत्यु के बारे में कुछ टिप्पणियों के साथ समाप्त करूंगा."

मृत्यु

"याद रखो कि तुम्हारी आत्मा के साथ जो तुम्हारे शरीर के सहजीवी सम्बन्ध होने के कारण तुम्हारा शरीर मर जायेगा जब तुम इससे बाहर निकलोगे. बहुत से लोग मृत्यु का सही समय नहीं जानते, लेकिन उनकी ऊपरी-आत्मा और उनकी आत्मा, सामान्यतया बाहरी अहम को बिना पता चले, और कभी-कभी आंतरिक पहचान को भी बिना पता चले, कभी-कभी पहले ही निर्णय ले लेती हैं. इसलिये, कोई आकस्मिक मृत्यु नहीं होती, जहाँ तक ऊपरी-आत्मा और आत्मा का सम्बन्ध है. आत्माएं अपने अनुभव के लिये अपने बाहर निकलने की परिस्थितियों को स्वयं चुनती है - और अपने प्रियजनों की सहमति से, जिन्होंने अपने बाद के दुःख को अपने विकास के लिये चुना है."

कोई भी मृत्यु आकस्मिक नहीं होती.

"मैं अपने मरने से कुछ समय पहले जानना चाहूँगा, यह कब होगा?"

"हो सकता तुम्हे पता चल जाये. मुझे तुम्हे वह जानकारी देने की अनुमति नहीं है. ज्यादातर मौतें शरीर के प्राकृतिक जीवनचक्र की समाप्ति पर होती है. इन घटनाओं में, आत्मा बीमारी को मृत्यु के लिये चुन सकती है, यदि बीमारी के अनुभव की चाहना हो तो. दूसरे समय में, शरीर केवल ढह जायेगा और मृत्यु हो जायेगी, साधारणतया नींद में. कुछ आत्माएं जीवन में जल्दी निकल जाने को चुनती हैं, कई कारणों से, लेकिन यह हमेशा आध्यात्मिक स्तर पर निर्णय के बाद होता है जो ऊपरी-आत्मा और उस आत्मा में, जो जाना चाहती है, और समकालीन आत्माओं में, जो उनका शोक मनायेंगी, के संयुक्त निर्णय से होता है."

"मैं नहीं समझता की जिन लोगों को दुःख का अनुभव होगा वह सामान्यतया उससे सहमत होंगें."

"नहीं, यह एक ऐसी अवधारणा है जिसे बहुत से लोगों के लिये सुनना और स्वीकार करना मुश्किल है. फिर भी, इसका ज्ञान होने से और यह जानते हुए की तुम्हारी आत्मा मरेगी नहीं, तुम्हे दुःख को पूरी ताकत से अनुभव करने से नहीं रोका नहीं जायेगा जब तुम्हारा कोई नजदीकी मरेगा. यह सभी मनुष्यों के लिये स्वाभाविक है कि किसी ऐसे के खोने का दुःख मनायें जिसे वह प्यार करते हैं. लेकिन इसे, फिर भी, यह जानकर तुम्हे कुछ शान्ति देनी चाहिए कि तुम्हारा प्रिय केवल आध्यात्मिक आयाम में गया है, संज्ञानात्मक और भावनात्मक रूप से ज्यों का त्यों, और अपनी सारी यादों के साथ. और तुम, भी, अनिवार्य रूप से पीछे जाओगे. इस आध्यात्मिक प्रक्रिया को समझना कि कैसे और कब मृत्यु होती है, एक मूल आस्था होनी चाहिये, तुम्हे दुःख की अनिवार्य भावनाओं से प्रभावपूर्ण ढंग से निपटने के लिये.

"जब लोग मरते हैं तो पीछे जीने वालों के लिये अपरिहार्य हानि से निपटना हमेशा ही दुखदायी होता होता है, चाहे वह बुढ़ापे में हो, जीवन में पहले हो, या आकस्मिक हो. लेकिन दिमाग में रखो, तुम्हारा संसार एक अखाड़ा है जहाँ आत्माएं परिस्थितियों को रूप देती हैं जो उन्हें वह अनुभव देती हैं

जिनकी प्रतिक्रिया में वह अपनी भावनाओं की रचना करती हैं. सबसे पहले भौतिक जीवन का यही मुख्य कारण है. इस तरीके से आत्माएं अपने बारे में जानती हैं जब वह एक के बाद एक जीवनकाल का अनुभव करती हैं. उदाहरण के लिये, वह ऐसा बारी-बारी से विजेता या खलनायक, एक सहायक या एक रुकावट डालने वाला, एक विद्यार्थी या एक अध्यापक, एक मरीज या एक डॉक्टर, एक पिता या एक बेटा बन कर करती हैं - और भावनाओं के टेढ़े-मेढ़े पथ का अनुभव लेने लिये जो यह भूमिकाएँ उत्पन्न करती हैं. जीवनकाल के माध्यम से इन बहुल भूमिकाओं का संचय प्रत्यक्ष रूप से ऊपरी-आत्माओं को भावुक स्थितियों के कई पहलू सीखने और अनुभव करने देते हैं. यह इन अनुभवों के माध्यम से ही होता है कि ऊपरी-आत्माएं विकसित होती हैं, क्योंकि धीरे-धीरे वह जो सब कुछ है के साथ एक हमेशा ही बढ़ते रहने वाले सामंजस्य की ओर बहते हैं."

"तो हिटलर की तरह कोई व्यक्ति अच्छा आदमी था या बुरा आदमी था? क्या वह एक खलनायक था, केवल अनुभव के लिये?"

"तुमने एक विवादास्पद विषय उठाया है. और यह विषय तुम्हारे लिये विशेष दिलचस्पी रखता है, यद्दपि तुम इसके बारे में चेतन स्तर पर नहीं जानते हो."

"तुम्हारा क्या मतलब है?"

"अच्छा, तुम्हारा हाल ही का जीवनकाल एक पोलिश ज्यू का था. तुम्हारी पत्नी और दो बच्चे 1939 में क्राकोव पर बम गिरने से मारे गए थे, और तुम्हे थोड़े समय के बाद गेस्टापो द्वारा सिर के पीछे से गोली मर दी गई थी."

रिक्की ने, आँखे चौड़ी करके, अविश्वासपूर्वक पूछा, "क्या? क्या वह सच है?"

पुरानी आत्मा ने शान्ति से कहा, "हाँ, यह सच है. तुम्हारे अमनपसंद होने का यह एक कारण है. तुमने हाल ही में प्रत्यक्ष रूप से युद्ध देखा है, और तुम्हे उस अमानवयिता को, जो उन स्थितियों में बढ़ जाती है, फिर से जीने का कोई चाव नहीं है."

"ओह, मेरे भगवान."

"हाँ. मैं उस बारे में, कि उस जीवन ने तुम्हारे वर्तमान अवतरण पर कैसे प्रभाव डाला है, थोडा और बाद में बताऊंगा."

रिक्की ने साँस लिया, "मैं उसका इंतजार करूंगा."

"अब, तुम्हारे हिटलर के बारे में प्रश्न के उत्तर में. याद रखो, तुम एक ही समय में दो दुनिया में रहते हो, इसलिये तुम्हारे प्रश्न के दो उत्तर हैं: एक तुम्हारे धरती पर जीवन के दृष्टिकोण से और दूसरा तुम्हारे आध्यात्मिक आयाम में जीवन के दृष्टिकोण से. क्योंकि वर्तमान में धरती पर रहते हो, तुम्हे उस पर केन्द्रित होना चाहिए जो भौतिक संसार में सबसे अधिक अनुकूलित कार्य करने का मार्ग हो. जिसे स्वीकार्य व्यवहार माना जाता हो, उसकी सीमाएं मूल्यों, आचारनीति, और तुम्हारी संस्कृति

की नैतिकता का प्रतिबिम्ब हैं. और तुम्हारे पास नियम हैं जो इन् विचारों से निकाले गये हैं. हिटलर के मामले में, उसके कृत्यों ने भावुक पीड़ा उत्पन्न की, लाखों लोगों के लिये ही नहीं, अपितु सारी पश्चिमी सभ्यता के लिये. और तुम्हारे पास इसके अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है कि तुम उसे और इसी तरह के क्रूर व्यकितियों को अपने सांस्कृतिक मूल्यों और नीतियों के सन्दर्भ में आंको. फिर भी, आंकना इतना आसान नहीं है, क्योंकि यह भी सच है कि हिटलर और संस्कृति, जिसने उस समय उसका समर्थन किया था, को यह विश्वास था कि वह अपने उच्चतम आदर्शों के अनुसार कार्यवाही कर रहे थे, और यह कि उनके कृत्य सही थे. ऐसी सभी तरह की घटनाओं में यह सच्चाई है. तानाशाह अपने कृत्यों को इस तर्क से सही ठहराते हैं कि वह उनके उच्चतम आदर्श का प्रतिबिम्ब हैं. फिर भी, अपरिहार्य रूप से, तुम अपनी संस्कृति के सन्दर्भ में अपने मूल्यों, नीतियों, और नैतिकताओं के आधार पर एक राय बनाने से और आंकने से बच नहीं सकते."

"मेरे लिये यह स्वीकार करना बहुत मुश्किल है कि एक पूरे देश के उच्चतम आदर्श ज्यूयों, जिप्सियों, समलैंगिकों, विकलांग लोगों, और वह जो दिमागी तौर पर बीमार हैं का विनाश करने का होगा."

"जर्मनी में सभी लोगों ने नाज़ी पार्टी को वोट नहीं दिया था, और जिन्होंने दिया था उन्होंने कभी यह अनुमान नहीं लगाया था कि पार्टी के आदर्श ऐसी क्रूरता की और ले जायेंगें."

"आत्माएं और ऊपरी-आत्माएं, भविष्य को जानते हुए, ऐसी मार-काट के लिये कैसे जिम्मेदार हो सकती हैं?"

"युद्धों ने सदियों से धरती को तबाह किया है. दहशत और क्षति का भावनात्मक अनुभव उस यात्रा का भाग हैं जो आत्माएं विकास करने के लिये चुनती हैं. फिर भी, जैसा कि मैंने पहले उस गृहकार्य में कहा था जो मैंने तब तुम्हे दिया था जब हम पहली बार मिले थे, कि दैविक चुनौती कहती है कि जब तुम्हारी भावनाएं जोर पकडती हैं और काबू मैं नहीं आती तो हमें स्वयं को या दूसरों को नहीं मारना चाहिये. नकारात्मक भावनाओं से अनुभव लेने और सीखने के लिये दुष्कर्म आवश्यक नहीं हैं."

"हम इस विषय के बारे में किसी समय बाद में विस्तार से चर्चा कर सकते हैं, लेकिन अब के लिये, मैं मृत्यु के विषय पर लौटूंगा."

"जैसा कि मैंने पहले कहा था, कोई मृत्यु आकस्मिक नहीं होती. फिर भी, अचानक हुई मृत्यु से झटका लग सकता है और किसी का, जो मरने के लिये तैयार नहीं है या जो मरने से डरता है, बाहरी अहम् और आन्तरिक पहचान उसका विरोध करेगें. ऐसे मामलों में, मृत्यु के समय सम्पूर्ण चेतना आध्यात्मिक आयाम की ओर ऊपर नहीं जा सकते."

"मुझे याद है कि मेरे अंकल इसके बारे में कुछ वर्षों पहले कुछ बता रहे थे, जब हम अपनी एक गाय को पास वाले फार्म पर गर्भाधान के लिये ले जा रहे थे."

"तुम सही हो. तुम्हारे अंकले ने इस तरह की कुछ घटनाओं का वर्णन किया था, जब तुम बारह वर्ष के थे, लेकिन मैं तुम्हारे लिये उनको फिर से दोहराऊंगा और उसमें थोड़ी और जानकारी भी जोड़ूगा जो अंकल ने तुम्हे बताया था."

रूहों का अस्तित्व

"आध्यात्मिक आयाम की और यात्रा सामान्यतया आसान होती है. मृत्यु के समय, व्यक्ति के सारे अनुभवों और यादगारों की अंतिम प्रति तेजी से एक के बाद एक दोहराई जाती है,[50] जब आत्मा ऊपरी-आत्मा से पुनर्मिलन की तैयारी करती है. उस समय, बाहरी अहम और आंतरिक पहचान आत्मा द्वारा जज्ब कर लिये जाते हैं. विरली घटनाओं में, हालांकि, चीजें वैसे नहीं होती जैसे नियोजित की जाती हैं, और बाहरी अहम और आंतरिक पहचान के अंश आत्मा में समाहित नहीं किये जाते हैं. वह बिखर जाती हैं और एक उपेक्षा की स्थिति में धरती की सतह पर मंडराती रहती हैं, समय के आयाम के बाहर. यह टुकड़े उस व्यक्ति की, जब वह मनुष्य था, यादें और अनुभवों को स्मृति में रखती हैं, और वह सामान्यतया अस्तित्व के रूप में जानी जाती हैं, रूहों के अस्तित्व, या भूत," पुरानी आत्मा ने बताया.

"जब यह होता है, तो निम्नलिखित तीन परिदृश्यों में से कम से कम एक परिदृश्य घटित हुआ होगा:

- उस व्यक्ति का, जिसकी मृत्यु हुई थी, धरती पर किसी अधूरे काम के साथ लगाव रहा होगा जिसे पूरा करने के लिये वह मजबूर महसूस करता है, इससे पहले कि वह आध्यात्मिक आयाम की और ऊपर उठे.[51] इन व्यक्तियों को सामान्यतया भूत कहा जाता है. वह समय के गुजरने के बारे में नहीं जानते और अनगिनत वर्षों के लिये भटकते रहते हैं, हैं. अक्सर कुंठा की स्थिति में, जब तक कि उन्हें शान्ति नहीं मिलती, जिसके बाद वह आध्यात्मिक आयाम में ऊपर उठ जाते हैं और अपनी ऊपरी-आत्मा के साथ फिर से मिल जाते

- उस व्यक्ति ने कोई भयानक काम किया होगा और वह कठोर दंड मिलने के डर के कारण आध्यात्मिक आयाम में जाने से डरता है. यह अस्तित्व शरारती हो सकते हैं. उनमें से कुछ अपने फायदे के लिये ऐसे लोगों का लाभ उठाने में आनंदित होते हैं जो शंकालु नहीं होते, चालाकी से काम ले कर और उन्हें नियंत्रित करने की कोशिश करते हुए.

---

50 वान पिम लोम्मेल. कॉंशिअसनेस बियॉन्ड लाइफ. न्यू यॉर्क: हार्पर कॉलिंस, 2010

51 इस विषय पर दिलचस्प किताबें हैं : कार्ल विक्कलैंड. थर्टी इयर्स अमोंग द डेड. पोमेरॉय: नेशनल साइकोलॉजिकल इंस्टिट्यूट. 1924 में पहला प्रकाशन; 1963 में दोबारा प्रकाशित. और भी, विलियम जे. बाल्डविन. स्पिरिट रिलीज़मेंट थेरेपी: ऐ तकनीक मैन्युअल.टेरा आल्टा: हैडलाइन बुक्स, 1992

- एक और घटना में, व्यक्ति केवल सदमे में हो सकता है, न जानते हुए - या ये स्वीकार न करते हुए - कि उसका शरीर नष्ट हो चुका है. यह अस्तित्व इधर-उधर भटकते रहते हैं जैसे कि वह कोहरे में हों, अनजाने में, जब तक कि उन्हें यह न बताया जाये कि उनके साथ क्या हुआ है. जब वह भटक रहे होते हैं, तो वह स्वयं को ऐसे व्यक्तियों के वातावरण की और आकर्षित महसूस करते हैं जिनकी भावनाएं वैसी ही होती हैं जैसी कि उनकी मृत्यु से पहले थीं. जब उनका एक उचित मेजबान से सामना होता है, तो वह उनके साथ सम्बद्ध हो जाते हैं, या उस व्यक्ति की आभा में निवास कर लेते हैं और वहीँ रहते हैं जब तक कि उन्हें जगाया न जाये और इस बात की जानकारी न दी जाये कि उनके भौतिक शरीरों के साथ क्या हुआ है."

"वह कैसे होता है? उन्हें कौन जगाता है और उन्हें बताता है?"

"अक्सर मेजबान एक चिकित्सक के पास जायेगा जिसने इन मामलों का प्रशिक्षण लिया होता होता है और जो अस्तित्व को 'छुड़ाने' में सक्षम होता है और उन्हें आध्यात्मिक आयाम में जाने का निदेश देता है. फिर भी, सामान्यतया अस्तित्व मेजबान के साथ ही रहता है जब तक कि उस व्यक्ति की मृत्यु न हो जाये और वह उस पार चला जाता है, और उस समय वह मेजबान के पीछे-पीछे आध्यात्मिक आयाम में चला जाता है. दूसरे अवसरों पर, अस्तित्व की एक 'उद्धार करने वाली आत्मा' के द्वारा आध्यात्मिक आयाम में जाने के लिये सहायता की जाती है. यहाँ आध्यात्मिक आयाम में कुछ आत्माएं विशेष तौर पर स्वयं को उद्धार के कार्य में लगाती हैं."

" तब क्या होता है जब एक अस्तित्व स्वयं को किसी के प्रभामंडल के साथ चिपका लेता है?"

"यह एक अच्छा प्रश्न है. अस्तित्व अपनी जागरूकता के अनुसार अलग-अलग होते हैं. ऐसा लगता है कि कईयों को यह नहीं पता होता कि वह निंद्रा में हैं, जबकि दूसरे अपने बारे में पूरी तरह से चौकन्ने होते हैं. फिर भी, सभी मामलों में जब रूह का अंश उसके वातावरण में निवास करने लगता है तो मेजबान को अपनी भावनाओं, व्यवहार, या स्वास्थ्य में एक अकस्मात बदलाव महसूस होता है. यह इसलिये होता है क्योंकि भावना, व्यवहार, या सेहत की चिंता, जो मृत्यु के समय अत्यधिक थी, वह मेजबान के अंदर तबदील कर दी जाती है. इसलिये, उदाहरण के लिये, अगर व्यक्ति मृत्यु के समय दुखी था, तो मेजबान को उदासी महसूस होगी. यदि व्यक्ति एक शराबी या धूम्रपान करने वाला था, तो मेजबान अचानक ही ज्यादा मात्रा में शराब के लिये तरसना शुरू कर देगा या अचानक ही सिगरेट के लिये तरसना शुरू कर देगा. इसी तरह, अगर एक व्यक्ति दिल के दौरे से मरा था या ऐसी बीमारी से मरा जिसने उसे पीड़ा का अनुभव कराया था, तो मेजबान अचानक ही शारीर के उन्ही भागों में इन पीड़ा के लक्षणों का अनुभव करने लगेगा. और अंत में, यदि अस्तित्व की मृत्यु दुर्घटना में हुई थी, उदाहरण के लिये यातायात में, आग में, या डूबने से, तो मेजबान को अचानक ही इन स्थितियों से डर लगना शुरू हो जायेगा."

"यदि रूह का अंश अपने आसपास के वातावरण के बारे में चेतन है, तो यह मेजबान को उन्ही भावनाओं का या व्यवहार का फिर से अनुभव करने के लिये फुसलायेगा जो उसकी मृत्यु के समय अत्यधिक थे. उन घटनाओं में, मेजबान अपने मस्तिष्क में अस्तित्व के साथ एक वार्तालाप का अनुभव करता है, अक्षरशः, जैसे वह पास में खड़े किसी दूसरे व्यक्ति के साथ एक सामान्य वार्तालाप कर रहा हो. ऐसी घटनाओं में, जहाँ आत्मा जन्म से ही जुड़ जाती है, मेजबान इसे सामान्य समझ सकते हैं, क्योंकि उन्होंने इसे कभी भी अलग रूप में नहीं जाना. वह बिना प्रश्न किये मान लेते हैं कि उनके सारे मित्रों के मस्तिष्क के अंदर भी उनके मित्र हैं, जो उनसे बातचीत करते हैं, और वह कभी भी इस पर सवाल उठाने के बारे में सोच नहीं सकते. हालांकि, इन घटनाओं में मेजबान की कष्टप्रद भावना और व्यवहार पूर्ण रूप से उनके अपने नहीं होते, अपितु अस्तित्व का एक अंश होते हैं."

"यह एक श्रवण-मतिभ्रम लगता है?"

"यदि देखने वाला प्रशिक्षित नहीं है तो उसको इस तरह से लग सकता है. फिर भी इस घटना में ऐसा नहीं है. एक चिकित्सक जो इस संभावना से परिचित है और जिसे 'अस्तित्व मुक्ति चिकित्सा' का प्रशिक्षण प्राप्त है, इसका आसानी से पता लगा सकता है, क्योंकि आसामी के माध्यम से अस्तित्व से बात करना बहुत आसान है.

"अच्छा समाचार यह है की जब ये अस्तित्व मुक्त होते हैं, तो सम्बन्धित लक्षण भी तत्क्षण ही लुप्त हो जाते हैं."

"क्या इन अस्तित्वों की आत्मा होती है?"

"आत्मा कभी क्षतिग्रस्त नहीं होती, यह कभी किसी तरीके से टुकड़ों में नहीं बांटी जा सकती. यह हमेशा ऊपर जाती है, सम्पूर्ण, जब शरीर मरता है तो. फिर भी, जैसा की मैंने पहले कहा था, कि हो सकता है ऊपर जाने से पहले आंतरिक पहचान और बाहरी अहम पूरी तरह से आत्मा में लीन न हुआ हो. यह पहलू, या आत्मा की उर्जा के अंश, जो सामान्यतया एक भावनात्मक अनुभव से सम्बद्ध होते है, व्यकित की यादों के साथ-साथ उसकी पहचान को भी रखते हैं. उनकी चेतन जागरूकता, या आत्मा के गुण, की सीमा बहुत सीमित मात्रा से ले कर पूरी तरह से बरक़रार रह गई लगती है. उदाहरण के लिये, एक भूत की चेतन जागरूकता बहुत सीमित होगी. इसलिये वह बार-बार ऐसे कृत्य करते हैं जो एक विशेष मंशा पर केन्द्रित होते हैं, हो सकता है किसी अधूरे कार्य को पूरा करने के लिये जिसके साथ वह भावुक रूप से बहुत मजबूती से जुड़े हैं. शरारती अस्तित्व, दूसरी ओर, अधिक बुद्धिमान लगता है और उसकी चेतना बहुत व्यापक होती है, लेकिन यह भी
सीमित होती है."[52]

52 इस तरह के अस्तित्व के अच्छे प्रमाण के लिये, कृपया देखें: जो फिशर. द साईरन कॉल ऑफ़ हंगरी घोस्ट्स. न्यू यॉर्क: पारा व्यू प्रेस, 2001

रिक्की बुदबुदाया, “ठीक है, मैं समझ गया.”

“अंत में, एक अतिरिक्त परिस्थिति के बारे में बताऊँगा जो इतनी असामान्य नहीं है पर इससे कुछ खास सम्बन्धित भी नहीं है, लेकिन वह कभी-कभी गर्भपात करवाने या गर्भ के गिरने से घटित होता है. बेशक, इन सभी घटनाओं में, आत्मा को पहले से ही पता होता है कि भ्रूण अपनी पूरी अवधि तक नहीं पहुंचेगा.”

रिक्की ने, बीच में बोलते हुए, पूछा, “क्या आत्माएं पहले से ही जानती हैं कि उनका गर्भपात कर दिया जायेगा? कुछ लोग गर्भपात को कुछ और नहीं अपितु पूर्व-विचारित हत्या मानते हैं.”

“मैं जानता हूँ कि यह एक विवादास्पद विषय है, लेकिन हम इस सन्दर्भ में आत्मा के दृष्टिकोण से बात कर रहे हैं, और, जैसा तुम जानते हो, आत्मा का अस्तित्व समय के आयाम के बाहर होता है, और यह सही तरीके से जानती है कि आगे क्या होगा. फिर भी, धरती के लोगों के लिये, जैसा की मैंने पहले कहा था - आप अपनी संस्कृति और प्रचलित रवैये और आस्थाएं, जो इसके अंदर मौजूद हैं, के परिणाम के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकते. तुम्हारे पास अपने दृष्टिकोण के आधार पर राय बनाने के सिवा और कोई विकल्प नहीं है. परम सत्य यहाँ इतना महत्वपूर्ण नहीं है; याद रखो कि जीवन उसी के बारे में है जो भावनाएं आप रचित करते हैं. यह इन्ही के माध्यम से होता है कि तुम अपनी आंतरिक प्रकृति के बारे में जान पाते हो.”

“तो यहाँ कोई सही या गल्त राय नहीं है?”

पुरानी आत्मा ने धैर्यपूर्वक कहा, “नहीं, यह केवल भावनात्मक अनुभवों की रचना होने के अनुसार ही होता कि तुम्हे अपनी आंतरिक पहचान के बारे में जानने की आवश्यकता पड़ती है.”

“लेकिन मैं विषय पर वापिस आता हूँ. एक आत्मा जिसका पहले किसी भौतिक ग्रह पर अवतरण नहीं हुआ है अक्सर अस्थाई गर्भावस्था के अनुभव को चुनेगी, अनुभव को लेने के लिये और भ्रूण की चेतनता के साथ मिलने के अभ्यास के लिये और जन्म से पहले आन्तरिक पहचान और बाहरी अहम बनाने के लिये. यदि आत्मा की मंशा भविष्य में धरती पर अवतरण करने की है तो यह अनुभव मूल्यवान अभ्यास कराता है. गर्भपात के बाद, आत्मा एक नकली भौतिक शरीर के संस्करण के साथ काम करते रहना चुन सकती है, जिस मामले में एक आभा जो भौतिक शरीर की नकल करता है यहाँ आध्यात्मिक आयाम में विकास करता रह सकता है और परिपक्व हो सकता है. तुम्हारा ‘रूह’ भाई, जिसका तुम्हारी माँ को गर्भावस्था की बाद की अवस्था में गर्भपात करवाना पड़ा था और जो अक्सर तुमसे मिलने आता है जब तुम सोने वाले होते हो, इस तरह की आत्मा का एक अच्छा उदाहरण है. वह आध्यात्मिक आयाम में बढ़ रहा है, एक मनुष्य जैसी आभा के साथ और एक नकली समयरेखा पर.”

“धन्यवाद. वह मेरे प्रश्नों में से एक था.”

“हाँ, मैं जानता हूँ.”

पुरानी आत्मा अब आरामकुर्सी पर पीछे की और हो कर बैठ गया और बोला, “अब तुम्हे समझ में आ गया. मैंने वास्तविकता के कुछ बुनियादी पहलुओं, या अवधारणाओं, को दोहराया है. कल हमने उन अवधारणाओं को दोहराया था जो ज्यादातर भौतिक पहलुओं से सम्बन्धित हैं, और आज हमने उन अवधारणाओं को देखा जो मुख्यतः अर्थ में छिपी हैं. उसमें से सब कुछ, जो मैंने तुम्हे कहा है, वास्तविक है और भौतिक संसार में घटित होता है. मुझे पक्का भरोसा है कि तुम इसे लाभदायक पाओगे अगर तुम इस जानकारी को मूल आस्थाओं का मंच बनाओ जिस पर तुम अपने अनुभव का निर्माण करो.”

रिक्की ने दृढ़तापूर्वक प्रतिक्रिया दी, “ठीक है, मैं उसे करने की कोशिश करूंगा.”

“तुम्हे यह जानने में दिलचस्पी होगी कि ज्यादातर लोगों की मनोवैज्ञानिक समस्याएं इस वास्तविकता से निकलती है कि, उनके निर्माणत्मक वर्षों में, उन्हें इन बुनियादी नियमों की जानकारी नहीं करवाई गई थी. इसलिये, जैसे-जैसे वह बड़े हुए, उनमें से कुछ ने संसार में चलने के लिये गल्त धारणाओं और गलतफहमियों के आधार पर झूठी मूल आस्थाएं बना लीं. और, जैसे-जैसे उनके अनुभव इकट्ठे होते रहे और समय के साथ लगातार उनका गलत अर्थ निकाला जाता रहा, तो बहुत गहरा भावनात्मक टकराव होना शुरू हो गया और कटुता शुरू हो गई. दुखदाई सच्चाई यह है कि ये टकराव घटित न होते यदि उन्हें शुरू में ही इन मूल आस्थाओं को, जिनके बारे में मैंने तुम्हे बताया था, अन्तस्थ करने का निदेश दिया जाता.”

“मैं समझ गया.”

“एक बार झूठी मूल आस्थाएं स्थापित हो जाएँ, तो समय के साथ भौतिक अस्तित्व का विषम अर्थ बनना होता शुरू हो जाता है, और जैसे यह होता है, मनोवैज्ञानिक टकराव होना शुरू हो जाता है. दुर्भाग्य से, एक व्यकित के लिये यह बहुत मुश्किल होता है कि वह झूठी मूल आस्थाओं के आधार पर वर्षों के लगाव को समाप्त कर सके. इसलिये, अक्सर चिकित्सा सहायता की आवश्यकता पड़ती है.”

रिक्की विस्मय से जोर से चिल्लाया, “मैं सोचता हूँ कि मेरी कितनी झूठी मूल आस्थाएं हैं?”

“तुम अच्छा काम करोगे अगर तुम्हे जो मैंने कहा है उसके बारे में विचार करो और इन अवधारणाओं को समावेश करने की कोशिश करो. इन पहलुओं को, कि संसार कैसे बना हुआ है, तुम्हारा इसमें क्या स्थान है, और तुम अपने अस्तित्व का अर्थ कैसे निकालते हो, तुम्हारी दूसरी प्रकृति बनने की आवश्यकता है, एक ऐसा लेंस जिसमें से तुम अपनी वास्तविकता का अर्थ निकालते हो और उसे समझते हो.”

“ठीक है, मैं इस काम करूंगा और इसके बारे में अपने मित्रों से बात करूंगा.”

“वह अच्छा होगा.”

पुरानी आत्मा ने जारी रखा, “हमने बहुत सारी जानकारी पूरी कर ली है, फिर भी मैं जानता हूँ कि तुम्हारे पास जीवन और मृत्यु के बारे में बहुत सारे सामान्य प्रश्न हैं, साथ ही साथ तुम्हारे लैंगिक रुझान के सन्दर्भ में व्यक्तिगत मुद्दों पर प्रश्न हैं, जिनके लिये तुम मेरी सलाह लेना पसंद करोगे.”

रिक्की ने आभार प्रकट करते हुए कहा, “हाँ, तुम्हारी सलाह बहुत अच्छी लगेगी.”

“मैं तुम्हारे प्रश्नों और तुम्हारी चिंताओं के बारे में जानता हूँ. जब तुम उसके बारे में सोचोगे जिसकी हमने आज और कल चर्चा की है, तुम्हे समझ में आयेगा, जैसे भी हो, कि तुम्हारे पास युवा व्यक्तियों की आकस्मिक मृत्यु के बारे में पहले से ही उत्तर हैं.

तुम अब यह भी जानते हो कि वह बीमारी जिससे फार्म पर दो लड़कों को पक्षाघात और मानसिक विकलांगता हो गई थी एक ऐसा विकल्प था जो उनकी आत्माओं ने जीवन के उस विशिष्ट परिप्रेक्ष्य का लाभ उठाने के लिये चुना था. वह व्यक्ति जो जन्म से या तो दिमागी तौर पर या शारीरिक तौर पर विकलांग हैं, सामान्यतया अपने जीवनकाल में कष्ट नहीं भुगतते, बशर्ते कि उनकी समुचित देखभाल हो. उनकी हालत पर क्रोध और उदासी ज्यादातर उनके दिलों में पैदा होती है जो उन्हें प्यार करते हैं और उनकी परवाह करते हैं, और यह उनकी दया के द्वारा ही होता है कि उन्हें अपनी आंतरिक प्रकृतियों के बारे में जानने का अवसर मिलता है.”

“यह उन दो छोटे लड़कों के लिये अन्यायपूर्ण लगता है. मैं जब फार्म पर होता हूँ तो मुझे उनकी देखभाल के लिये सहायता करने में बहुत मुश्किल होती है. मैं किसी भी तरह से उनसे जुड़ नहीं पाता हूँ, और मुझे यह अच्छा नहीं लगता जब मुझे उनकी देखभाल करने के लिये कहा जाता है.”

“अच्छा,उसके बारे में चिंता न करो. इसके कारण का सम्बन्ध तुम्हारे पिछले जन्म से है जिसका तुमने पर्याप्त रूप से इस्तेमाल नहीं किया.”

“एक और पूर्व जन्म? ये कौन सा वाला था?”

“सत्तरहवीं सदी में यूरोप में यह एक छोटा सा जीवन था. तुम एक मस्तिष्क रूप से विकलांग लड़के थे. तुम्हारे माता-पिता ने, जो बहुत गरीब थे, तुम्हे त्याग दिया था. तुम जीवन-यापन के लिये याचना करके मांगते रहे और तुम नौ वर्ष की उम्र में मर गए, जब घोड़े की बग्गी ने तुम्हे धक्का मर कर गिरा दिया था. तुम्हारे शरीर को कूड़े के साथ फेंक दिया गया था.”

“ओह...मैं समझता हूँ उनके अनुभव में मैं किसी तरह से अपना प्रतिबिम्ब देखता हूँ.”

“हाँ तुम देखते हो, अचेतन रूप से. भाग्य से, इन लड़कों को उससे बहुत अच्छी देखभाल मिल रही है जो तुम्हे मिली थी.”

“वह कार दुर्घटना भी, जिसमें तुम्हारे मित्र को पक्षाघात हो गया था, एक नियत घटना थी जिसे उसने यह अनुभव करने के लिये चुना था कि वह इस तरह की चोट की चुनौतियों से सीख सके. और

उन व्यक्तियों ने भी, जो उससे प्यार करते थे, तुम्हारे सहित, उस भावनात्मक अनुभव को लेने का विकल्प चुना था, ताकि वह अपनी आंतरिक प्रकृति के बारे में कुछ सीख सकें."

"हाँ, मैं समझ गया. लेकिन उसके बारे में सोचना मुझे परेशान करता है."

रिक्की को यह आश्चर्य होना शुरू हो गया कि क्या पुरानी आत्मा उसे उसके लैंगिक रुझान के बारे कोई निदेश देने जा रही है.

"तुम्हारे लैंगिक-रुझान के लिये मेरी सलाह को, हालांकि, इंतजार करना चाहिये. मुझ पर भरोसा करो कि तुम्हारे जीवन का विकास उसी तरह से हो रहा है जिस तरह से तुमने अपने जन्म से पहले इसे नियोजित किया था. तुम्हारे लिये आगे कुछ मुश्किल समय है, और मैं तुम्हे उसमें से निकलने के लिये जितना अच्छा मार्गदर्शन दे सकता हूँ दूँगा, लेकिन उतना ही जितने से तुम्हारे उन अनुभवों का प्रभाव, जो तुमने चुने हैं, कम न हो."

रिक्की ने कुछ निराशा से उत्तर दिया, "ठीक है, मैं समझ गया. क्या मैं ठीक रहूँगा?"

"हाँ, लेकिन मैं तुम्हे इस समय इतना ही बता सकता हूँ. हमारी मुलाकात अब समाप्त होनी चाहिये, लेकिन मैं तुम्हे दूर रह कर समर्थन देता रहूँगा. हम निकट भविष्य में फिर मिलेंगें, जिस समय मैं तुम्हारे लैंगिक-रुझान के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दूंगा, साथ ही साथ कई दूसरे मुद्दों पर. तुम्हारे आने का धन्यवाद. मेरे विचार हमेशा तुम्हारे साथ हैं."

रिक्की खड़ा हो गया और उसने पुरानी आत्मा का धन्यवाद किया. पुरानी आत्मा उसे द्वार तक ले गई, जिसने उसे वापिस भौतिक संसार में धकेल दिया. और, पहले की तरह, घड़ी से कोई समय नहीं व्यतीत हुआ था, जबकि रिक्की के समय व्यतीत होने के अपने व्यक्तिगत अनुभव के अनुसार, ऐसा लगता था कि जैसे कई घंटे गुजर चुके हों.

अपने विचारों को थोड़ी देर तक संग्रह करने के बाद, रिक्की अपने घोड़े पर चढ़ा और फार्म की और चल दिया. वह स्वयं को बड़ा और बुद्धिमान महसूस कर रहा था. उसके जीवन का परिप्रेक्ष्य और वह कैसे इसे स्वयं प्रयोग करेगा, पुरानी आत्मा के साथ उसकी पांच वर्ष पहले की उसकी पहली मुलाकात के बाद बदल गया था, और अब, एक बार फिर, इन दो मुलाकातों के बाद, उसे लग रहा था कि उसे जीवन दोबारा मिल गया है.

जब रिक्की वापिस फार्म पर जा रहा था, तो वह मनन करने लगा कि वास्तव में पुरानी आत्मा के साथ उसका क्या सम्बन्ध था. पुरानी आत्मा निश्चय ही एक सच्ची मित्र लगती थी. हो सकता है वह जन्म से पहले एक-दूसरे को आत्माओं की तरह जानते हों? जब उसने इस विचार को अपने मस्तिष्क में सुनियोजित करना शुरू किया, तो वह उस घास के मैदान/पत्थर की दीवार की परिधि पर, जिनसे लॉन के पश्चिमी ओर एक बाड़ बनती थी और जिसने फार्म को चारों ओर से घेरा हुआ था, पहुँच गया.

उसका ध्यान स्थानीय बूचडखाने के एक ट्रक से, जो आगे पशुओं के बाड़े के पास आ कर घोड़े के युवा बच्चों को लादने के लिये रुका था, भंग हो गया.

रिक्की घर वापिस लौट आया और कुछ दिनों बाद स्कूल जाना शुरू कर दिया, पहले से अधिक निश्चय के साथ. कक्षा के पहले कुछ दिन तनावपूर्ण थे. उस वर्ष, उसने रिकिविक के व्यापारिक क्षेत्र में एक दूसरे स्कूल में विद्यार्थियों के ने समूह के साथ जाना शुरू किया था. यह चार वर्ष का कोर्स था जो विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के लिये तैयार करने पर केन्द्रित करता था. यह नया स्कूल रिकिविक के मध्य भाग में एक तालाब के नजदीक था. एक कक्षा में बीस विद्यार्थी थे, जिसमें पीछे की दीवार पर एक बहुत बड़ा ब्लैकबोर्ड था. बाई तरफ खिड़कियाँ थीं, जिसमें से तालाब का दृश्य दिखाई देता था, और प्रवेश द्वार के बाहर दाहिनी दीवार के साथ सटा हुआ एक गलियारा था. रिक्की एक छः फुट लम्बे लड़के, जिसका नाम अल्फ्रेड था, के साथ बैठता था. उसके नैन-नक्श अच्छे थे, गहरे भूरे बाल थे, और असामान्य रूप से सुंदर आँखें थी. रिक्की के विचार से अल्फ्रेड निराशाजनक रूप से पढ़ने-लिखने वाला लड़का था. लेकिन उस वजह से उसके पढने की कुछ अच्छी आदतें थीं, और रिक्की के मुकाबले उसके ग्रेड हमेशा अच्छे होते थे. वह अच्छे दोस्त बन गये, और वह बहुधा पढाई में रिक्की की मदद किया करता था, स्कूल में भी और स्कूल के बाद भी.

रिक्की ने जो पुरानी आत्मा से सीखा था उसके बारे में वह लगातार उत्साहित रहता था, और वह इन अवधारणाओं को स्कूल के वर्षों के दौरान लागू करना चाहता था, जैसा कि उसने वादा किया था. 15 मिनट की अवकाश अवधि उसके लिये अन्वेषण करने के लिये एक अच्छा अवसर होता था. इस समय के दौरान, रिक्की अक्सर किसी एक अवधारणा का, जो उसने पुरानी आत्मा से जानी थी, और जिसकी वह परीक्षा लेना चाहता था, जिक्र वार्तालाप में किया करता था. उदाहरण के लिये, एक अवसर पर, उसने कहा, “तुम जानते हो, अल्फ्रेड, मैं अपने आप में विशिष्ट महसूस करता हूँ और मेरे जैसा कोई और नहीं हो सकता.”

अल्फ्रेड ने प्रतिक्रिया दी, “उससे तुम्हारा क्या मतलब है?”

रिक्की ने उत्तर दिया, “अच्छा, संसार में मेरे जैसा और कोई नहीं है. मैं विशिष्ट हूँ, और इसलिये, मैं किसी और से बदला नहीं जा सकता.”

अल्फ्रेड ने कहा, “मैं समझता हूँ हम दोनों ही ऐसे हैं!”

रिक्की ने जारी रखा, “मेरी उपस्थिति एक उपहार है. प्रत्येक शब्द जो मैं बोलता हूँ तुम्हारे संसार में वृद्धि करता है.”

अल्फ्रेड ने फिर से जोड़ा, “और इसी तरीके से मेरे शब्द तुम्हारे संसार में वृद्धि करते हैं!”

रिक्की ने, दृढ़ता से इसे ऐसे ही न जाने देने के लिये, जारी रखा,” प्रत्येक दृष्टीकोण जिसे मैं तुम्हे वर्णित करता हूँ वह, तुम्हे जो कुछ तुम सोचते हो और यह जानने के लिये कि तुम मुझसे कैसे भिन्न हो, उसके विरुद्ध कहने देता है.”

अल्फ्रेड ने, मुस्कराते हुए, कहा, “मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ जब मुझे यह पता चलता है कि तुमसे मैं कैसे भिन्न हूँ.”

रिक्की ने भी मुस्कराते हुए उत्तर दिया, “और मैं भी यही करता हूँ.”

इस तरीके से, और स्कूल के पूरे वर्ष के दौरान, रिक्की उन अवधारणाओं का अभ्यास करता रहा जो पुरानी आत्मा ने उसे बताईं थीं. अल्फ्रेड एक अच्छा साथी था और रिक्की की हरकतों में भाग लेता था, जब वह पुरानी आत्माओं की अवधारणाओं को अभ्यास में लाता था.

एक दिन रिक्की ने कहा, “आज, मुझे एक फूल की भांति महसूस हो रहा है, मैं खिल रहा हूँ, बिना क्षमाशील हुए मैं अपनी पंखुडियां फैला रहा हूँ ताकि हर कोई देख सके.”

अल्फ्रेड ने, जो एक संकोची किस्म का व्यक्ति था, उत्तर दिया, “तुम ऐसा क्यों करना चाहोगे?”

रिक्की ने प्रतिक्रिया में उत्तर दिया, “यह मेरी पहली और बुनियादी जिम्मेदारी है कि मैं अपने अस्तित्व के लिये जीवन का हिसाब दूँ. यह एक उपहार है. मेरी तरफ से तुम्हारे लिये, उपहार; क्योंकि तुम मेरे लिये एक उपहार हो. होना या नहीं होना. वही एक प्रश्न है, और चुनौती.”

अल्फ्रेड ने उससे कहा, “तुम फिर से वही कर रहे हो. ऐसा लगता है कि तुम मुझे विवाह का प्रस्ताव कर रहे हो!”

रिक्की ने मुस्कराते हुए कहा, “सच्चाई मेरे रोम-रोम से निकल रही है.”

और इस तरह से यह चलता रहा. जैसे-जैसे सप्ताह गुजरते गए, रिक्की उन अवधारणाओं का अभ्यास करता रहा जो पुरानी आत्मा ने उसे बताईं थीं. इस आध्यात्मिक अस्तित्ववादी दर्शन ने उसके जीवन के प्रति रवैये पर एक सकारात्मक प्रभाव डालना प्रारंभ कर दिया. अपने पहले के संघर्षों का स्थान, जिनसे उसका हकलाने और शैक्षणिक समस्याओं का हिचकिचाहट भरे रवैये का विकास हुआ था, आंतरिक आत्मविश्वास लेने लगा. जितना अधिक वह मूल आस्थाओं को अन्तस्थ करने की और जीवन के ढांचे को, जो वह प्रदान करते थे, समझने की कोशिश करता था, वह उतना ही अच्छा कार्य करता प्रतीत होता था. जीवन अवश्यंभावी आसान नहीं है, लेकिन इन अनिवार्य उपकरणों ने, जो उसे मूल आस्थाओं द्वारा दिये गये थे, उसके लिये उतार-चढ़ाव में से, जिनका वह अनुभव कर रहा था, गुजरना आसान कर दिया था. वह चकित था कि स्कूल में यह कभी क्यों नहीं पढाया गया था. निश्चय ही, हरेक युवा शिष्य इन मूल आस्थाओं से लाभ उठाएगा, उसने सोचा.

उसे पता चला कि सामाजिक स्थितियों से परे रहने और क्षमाशील होने की आदत पर कैसे काबू पाया जाये. वह जानता था कि ऐसा महसूस करते रहने के लिये उसके पास कोई कारण नहीं था, लेकिन आदत को छुड़ाना इतना आसान नहीं था, विशेषकर तब जब उसे अनिश्चय की परिस्थितियों का सामना पड़ता था. इसलिये उसने स्वयं को याद दिलाना शुरू कर दिया, जब भी वह ऐसा महसूस करता था, कि वह विशिष्ट और उसका स्थान कोई नहीं ले सकता. किसी चीज का गल्त होना और सबसे अच्छा विचार न आना ठीक था, लेकिन कम से कम, यह वार्तालाप में एक विषम परिप्रेक्ष्य जोड़ता

था; नहीं जानना उतना ही सही था जितना कि जानना. फिर भी, अनेक चुनौतियाँ थीं, जैसे जब उसे यह समझ में नहीं आता था कि अध्यापक क्या कह रहा था तो कक्षा में प्रश्न पूछना. और छोटी-छोटी चीजें, जैसे अपने पार्ट-टाइम काम पर रहते हुए फोन का उत्तर देना, यद्दपि वह यह उस प्रश्न का उत्तर भी नहीं जानता था जो उससे पूछा जा सकता था.

फिर, नियति थी. पुरानी आत्मा ने सलाह दी थी कि वह नियति को गले लगाये. इसलिये, एक दिन स्कूल में अवकाश काल के दौरान, जब अल्फ्रेड कुछ छोटे से दुर्भाग्य पर विलाप कर रहा था, रिक्की ने टिप्पणी दी, “तुम जानते हो, यह तुम्हारे कहने से ही हुआ है!”

अल्फ्रेड का उत्तर, एक और अनचाहे बुद्धिमानी के निवाले का अनुमान लगाते हुए, था, “क्या? मैंने कभी इसे होने के लिये नहीं कहा. तुम्हारा क्या मतलब है?”

रिक्की ने उससे पूछा, “अच्छा, तुम जीवन के बारे में क्या सोचते हो?”

अल्फ्रेड ने उत्तर देने से पहले कुछ सेकेण्ड सोचा, “सीखना, अनुभव लेना?”

रिक्की ने कहा, “बिल्कुल सही. तुम्हारा दुर्भाग्य एक सीखने का अनुभव था, क्या ऐसा नहीं था?”

अल्फ्रेड ने कहा,” हाँ, लेकिन मैंने इसके लिये नहीं कहा था. यह ईश्वर की इच्छा होगी.”

रिक्की ने कहा, “क्या तुम सोचते हो कि ईश्वर तुम्हे परेशान करना चाहता है?”

अल्फ्रेड ने कहा,”अच्छा, नहीं. मैं सोचता हूँ मैं एक बहुत अच्छा व्यक्ति हूँ.”

रिक्की ने प्रतिक्रिया दी, ”तो, तुम क्यों सोचते हो कि वह ऐसा करेगा? तुम्हे दूसरे दृष्टिकोण से सोचना होगा. हो सकता है तुमने ही इसकी योजना बनाई थी, इससे सीखने के लिये; यह देखने के लिये कि तुम इससे कैसे निपटोगे; अपने बारे में सीखने के लिये. तुमने अभी-अभी कहा है कि जीवन सीखने और अनुभव करने के लिये है.”

अल्फ्रेड ने धीमे से कहा, “हाँ?”

रिक्की ने जारी रखा, “इसे इस रूप से देखो. तुम्हारी आत्मा शाश्वत है, लेकिन तुम्हारा शरीर नहीं है. तुम्हारे शरीर के जन्म से पहले, तुमने इस जीवन के लिये योजनायें बनाई थीं. तुम क्या सीखना चाहते थे, उसके लिये तुम्हारे विशेष लक्ष्य थे. तुमने अपने मार्ग में कुछ घटनाएं रखीं जो तुम जानते थे कि तुम्हारे जीवनकाल में तुम्हारे मार्ग में आयेंगी. यह घटनाएं होनी नियत हैं; वह तुम्हारी नियति हैं. अब तुम्हे यह जानना है कि तुम अपने बारे में क्या सीखना चाहते थे.”

अल्फ्रेड झेंप से मुस्कराते हुए बोला,”ठीक है, मैं समझ रहा हूँ कि तुम क्या कह रहे हो. लेकिन मैं इसे पसंद नहीं करता. जीवन निष्पक्ष नहीं है.”

उसी समय, अवकाश को समाप्त करने की घंटी बज गई. जैसे ही अल्फ्रेड कक्षा में जाने के लिये मुड़ा, उसने टिप्पणी की, “तुम जानते हो, हम में से कोई भी इसमें से जीवित नहीं निकलेगा!”

रिक्की मुस्कराया, “क्या! बेशक नहीं निकलेगा!”

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें